पंचम दीक्षांत समारोह

Fifth Convocation

गुरुवार, 21 फरवरी, 2019

Thursday, February 21, 2019

स्वागत भाषण एवं विश्वविद्यालय की गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन

Welcome Address and Brief Report of University Activities

प्रो. (डॉ.) प्रयाग दत्त जुयाल

कुलपति

Prof. (Dr.) Prayag Dutt Juyal

Vice Chancellor

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

Nanaji Deshmukh Veterinary Science University, Jabalpur (M.P.)

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय
जबलपुर, मध्यप्रदेश

पंचम दीक्षांत समारोह

21 फरवरी 2019

स्वागत उद्बोधन

एवं

विश्वविद्यालय गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय

प्रो. (डॉ.) प्रयाग दत्त जुयाल

कुलपति

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय

जबलपुर

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के पंचम दीक्षांत समारोह के अध्यक्ष एवं कुलाधिपति महामहिम राज्यपाल मध्यप्रदेश परम श्रद्धेय महामहिम श्रीमती आनंदीबेन पटेल, माननीय श्री तरूण भनोत, वित्त मंत्री मध्यप्रदेश शासन, माननीय श्री लाखन सिंह यादव, मंत्री, पशुपालन, मछुआ

कल्याण विभाग, श्री लखन घनघोरिया, सामाजिक न्याय, निशक्त जन कल्याण एवं अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री, मध्यप्रदेश, डॉ. अजय बिश्नोई, पूर्व पशुपालन मंत्री एवं विधायक पाटन, श्री अशोक रोहाणी, विधायक, श्री इन्दू तिवारी, विधायक, श्री विनय सक्सेना, विद्यायक, श्री संजय यादव, विधायक, आदरणीय श्री ए.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल, नई दिल्ली जो दीक्षांत भाषण देंगें तथा डॉ. एम.सी. वार्षणेय, पूर्व कुलपति, कामधेनु यूनिर्वसिटी, गुजरात जो आज विशिष्ट अतिथि होंगे। विभिन्न विश्वविद्यालय के सम्माननीय कुलपतिगण डॉ प्रदीप कुमार बिसेन, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, डॉ आर.एस. शर्मा, मध्यप्रदेश आर्युविज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, डॉ कपिल देव मिश्रा, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, डॉ. बलराज चौहान, लॉ विश्वविद्यालय, जबलपुर, सम्माननीय प्रमण्डल सदस्यगण, विद्या परिषद् सदस्यगण, प्रशासनिक परिषद् सदस्यगण, शहर के प्रबुद्धजन, पूर्व कुलपति डॉ. गोविंद प्रसाद मिश्र, विश्वविद्यालय के संचालकगण, अधिष्ठातागण, प्राध्यापक बंधु, पूर्व छात्रगण, उपाधि एवं स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र–छात्रायें, संचार एवं समाचार पत्रों के आदरणीय प्रतिनिधिगण, प्रिय विद्यार्थियों एवं सज्जन वृन्द ।

हमारे विश्वविद्यालय का उद्भव जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय से 3 नवम्बर 2009 में हुआ । मध्यप्रदेश एक्ट नं. 16, 2009 के तहत् म.प्र. पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के नाम परिवर्तन संशोधन अधिनियम क्रं. 32, 2012 के द्वारा विश्वविद्यालय का नाम नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय अनुमोदित हुआ, वह नाम है ख्यातिबद्ध, सामाजिक पुरोधा राष्ट्रऋषि भारत रत्न स्वर्गीय चंडिकादास अमृतराव देशमुख जी जो कि

"नानाजी देशमुख" के प्रचलित नाम से सर्वविदित रहे हैं । नानाजी के मन में सदा ही गरीब एवं कमजोर वर्ग के प्रति बहुत अधिक दया का भाव होने के कारण उन्होंने इस शोषित एवं अविकसित वर्ग के उत्थान के लिये **"ग्रामोदय"** नामक योजना की परिकल्पना की थी । उनका पूर्ण विश्वास था कि ग्रामोदय कि परिकल्पना सर्वांगीण विकास का आधार तभी हो सकेगी जब इसमें एकीकृत पशुधन विकास को भी समावेशित किया जाये। अर्थात पशुधन के विकास के बिना ग्रामोदय कार्यक्रम का सफल होना संभव नहीं है । पशुधन किसानों के लिये आर्थिक उन्नति का स्त्रोत हो सकता है, इसीलिए उनके मन में यह विचार था कि देशी नस्ल के पशुओं का उत्पादन बढ़ाया जाये ताकि पशुपालन फायदे का उपक्रम बन सके और देश का गरीब पशुपालक आर्थिक तंगी और बदहाली से मुक्त हो सके। नानाजी जब सक्रिय राजनीति के चरम पर थे, उस समय उनके मन में निःस्वार्थ भाव से मानव जाति की सेवा का भाव इतना धर कर गया कि वे राजनीति छोड़ कर चित्रकूट आ गये। चित्रकूट, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित हैं। उनके द्वारा चयनित किया गया यह जिला उनके ग्रामोदय कार्यक्रम का विकसित प्रारूप है जो कि आर्थिक सम्पन्न ग्रामीण विकास का सपना सच करता है।

ऐसे समर्पित, कर्मठ, दयालु समाजसेवी महापुरूष के नाम को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए म.प्र. शासन ने हमारे विश्वविद्यालय को यह नाम दिया जो कि हमारे लिए गौरव और अभिमान का विषय है। ऐसे महान सेवाभावी के नाम से हमारा विश्वविद्यालय जाना जाता है और हमारे लिए श्रद्धेय नानाजी हमेशा प्रेरणा के स्त्रोत बने रहेंगे, जिससे मानव मात्र के प्रति जिम्मेदारी का भाव इस समाज में अनंत काल तक बना रहे ।

प्रदेश के गरीब पशु पालकों की आर्थिक परिस्थिति में सुधार जैसी उम्मीदें शासन की इस विश्वविद्यालय के माध्यम से हैं जो कि हमारा कर्तव्य और जिम्मेदारी है, हम इस कार्य में भविष्य में पूर्ण सफल होंगे । देशी नस्ल के पशुओं की दुग्ध उत्पादक क्षमता बढ़ाने जैसे कार्यों पर हम विशेष ध्यान दे रहें है । समाज के सबसे वंचित और अंतिम पंक्ति में खड़े गरीब किसानों/पशुपालकों के उन्नयन और चहुमुखी विकास के लिये यह वि.वि. कृत संकल्पित है ।

हमारे विश्वविद्यालय के अंतर्गत 3 पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर, महू और रीवा में स्थापित है। इसके माध्यम से साढे पांच वर्ष में स्नातक की उपाधि प्रदान की जाती है। इसके अलावा स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पति उपाधि पाठ्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं। जबलपुर स्थित पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय अपने गौरवशाली 70 वर्ष पूर्ण कर चुका है, जबकि पशुचिकित्सा महाविद्यालय, महू भी अपने 63 वर्ष पूर्ण कर चुका है । सन् 2007 में तीसरा पशुचिकित्सा महाविद्यालय, रीवा की स्थापना की गई है जिसे सन् 2015 में भारतीय पशुचिकित्सा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। हमारे विश्वविद्यालय में मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना अक्टूबर 2012 में की गई है ।

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जबलपुर, महू और रीवा के प्रत्येक महाविद्यालयों में स्नातक स्तर के 87 छात्रों के प्रवेश की क्षमता है, जबकि मत्स्य महाविद्यालय, जबलपुर की क्षमता 33 स्नातक छात्रों की है । इस विश्वविद्यालय के अंतर्गत 5 वेटनरी पालीटेक्नीक कॉलेज विद्यमान हैं, जो कि जबलपुर, महू, रीवा, भोपाल और मूरैना में संचालित किये जा रहे हैं। जिसके अंतर्गत 60 छात्रों के लिये पशुपालन का 2 वर्षीय

डिप्लोमा प्रदान किया जाता है। विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है । विश्वविद्यालय की बेवसाइट ठीक तरह से काम कर रही है। विश्वविद्यालय में योजनाओं को गति देने के लिये Vision-2050 बनकर तैयार हो चुका है ।

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर में 21 अप्रैल 2010 को सेंटर फॉर वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हैल्थ, जबलपुर की स्थापना की गई, जो कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला है। वर्ष 2016 में विश्वविद्यालय द्वारा केंद्र की स्थिति को उन्नयन कर स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हैल्थ कर दिया गया। इस संस्थान के वैज्ञानिक अपनी सेवाएँ विशेषकर वन्यप्राणी फॉरेंसिक, वन्यप्राणी उपचार एवं वन्यप्राणी संरक्षण के क्षेत्र में दे रहे हैं । यहीं नहीं बल्कि स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हैल्थ, जबलपुर अपनी सेवाएँ प्रदेश के अलावा देश के अन्य प्रदेशों में भी प्रदान करने के कारण वन्यप्राणी स्वास्थ्य के क्षेत्र में पूरे देश में अग्रणी संस्थान के रूप में उभर रहा है। इस संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा विश्व में पहली बार भारतीय जंगली सुअर तथा बारह सिंगा का माइटोकोन्ड्रियल डी.एन.ए. मोलीक्यूलर सीक्वेंस का अध्ययन किया गया जिससे यह ज्ञात हुआ कि आधुनिक सुअर प्रजाति के विकास में भारतीय जंगली सुअर का अहम योगदान है। तथा विलुप्त होती प्रजाति को बचाया जा सकता है।

मध्यप्रदेश, दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में देश में तीसरे स्थान (13.4 MT) पर है एवं दुग्ध उत्पादन वृद्धि दर 8.61 प्रतिशत है, जो कि राष्ट्रीय दर (3.97 प्रतिशत) से दोगुना है। परंतु प्रदेश में दुग्ध प्रसंस्करण की क्षमता 10 प्रतिशत से भी कम है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादों में वृद्धि हेतु इस विश्वविद्यालय द्वारा एक डेयरी साईंस एवं फूड टेक्नोलॉजी महाविद्यालय

प्रस्ताव मध्यप्रदेश शासन द्वारा मंजूर किया जा चुका है। तथा 123.20 करोड रू. का अनुमोदन हो चुका है। इस महाविद्यालय के अंतर्गत 05 विभाग एवं 01 अनुभाग होगा जिसमें प्रतिवर्ष 40 छात्रों को बी.टेक. (डेयरी टेक्नालाजी) प्रदान की जायेगी और आई.सी.ए.आई द्वारा 5वीं Deans Committee के सुझावों अनुसार संचालित होगा। इस महाविद्यालय के स्थापित होने से नौजवाओं को प्रदेश में ही दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा वैल्यू एडीशन द्वारा किसानों को फायदा होगा।

महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में स्मार्ट क्लास की शुरूआत की गई है। इसी तारतम्य में पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय जबलपुर, रीवा, महू में कुल 11 स्मार्ट क्लास विकसित किये गये एवं अन्य महाविद्यालयों में भी स्मार्ट क्लास के कार्य त्वरित गति से प्रगति पर हैं।

विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु एक डिजिटल लाईब्रेरी की शुरूआत की गई है जिसका उद्घाटन मध्यप्रदेश की राज्यपाल महोदया महामहिम श्रीमति आनंदीबेन पटेल जी के कर कमलों द्वारा दिनाँक 22 जुलाई 2018 को किया गया।

उच्च शिक्षा हेतु विश्वविद्यालय के 17 विभागों के अंतर्गत M.V.Sc./M.Sc. डिग्री कि सुविधा है और 14 विभागों में विद्यावाचस्पति उपाधि (Ph.D.) कि सुविधा है। पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, रीवा में M.V.Sc. डिग्री पाठ्यक्रम की भी शुरूआत हो चुकी है। स्नातकोत्तर उपाधि जबलपुर

महाविद्यालय में 76, महू 65 एवं रीवा में 59 छात्रों को प्रवेश की सुविधा है। स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हैल्थ, जबलपुर में संचालित नये पाठ्यक्रम के अंतर्गत् B.V.Sc. & A.H. उत्तीर्ण छात्रों के लिए वन्यप्राणी स्वास्थ्य प्रबंधन के क्षेत्र में एक वर्षीय PG डिप्लोमा एवं जू–कीपर्स के लिए त्रैमासिक सर्टिफिकेट कोर्स की शुरूआत की गई है।

विश्वविद्यालय के अंतर्गत रीवा एवं महू पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालयों में वर्ष 2017–18 से विद्यावाचस्पति डिग्री का पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया जा चुका है। विद्यावचस्पती उपाधि हेतु जबलपुर महाविद्यालय में 31, महू में 13 रीवा में 3 छात्रों के प्रवेश की सुविधा है।

इस विश्वविद्यालय के 34 छात्र–छात्राओं ने 2016–17 में ICAR, JRF की परीक्षा उत्तीर्ण कीं, जिसमें 04 छात्र–छात्राओं को Fellowship प्राप्त हुआ एवं वर्ष 2017–18 में 42 छात्र–छात्राओं ने ICAR, JRF की परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमें 11 छात्र–छात्राओं को Fellowship प्राप्त हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर की रैंकिग गतवर्ष 38 वी थी जो कि अब 36वीं हो गयी है। वहीं पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के अंर्तगत इस विश्वविद्यालय ने 5वॉ स्थान अर्जित किया है। ये इस विश्वविद्यालय के लिये महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नात्कोत्तर छात्र–छात्राएँ शिक्षण, अनुसंधान एवं पशुचिकित्सा के अतिरिक्त देश एवं प्रदेश द्वारा आयोजित संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) एवं लोक सेवा आयोग (PSC) परीक्षाओं में भी भाग लेकर उच्च प्रतिष्ठित पदों पर आसीन हैं। विश्वविद्यालय के

01 छात्र IAS एवं 02 IPS के रूप में कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा अनेक छात्र रिमाउंट वेटनरी कॉप्स (Remound Veterinay Corps) प्राप्त कर आर्मी, पैरामैडिकल, बी.एस.एफ., सी.आई.एस.एफ. में चयनित होकर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त हमारे **"स्नातक स्टार्टअप परियोजना"** के अंतर्गत गौपालन, मुर्गीपालन, बकरीपाल्न, सूकर पालन आदि व्यवसाय में भी कर रहें हैं।

सार्वजनिक आधारभूत अधोसंरचना इकाईयों का निर्माण

महू में कन्या छात्रावास का निर्माण – पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय महू में 01 करोड़ 59 लाख की लागत से कन्या छात्रावास का निर्माण किया जा रहा है।

आदिवासी कृषक प्रशिक्षण छात्रावास – कृषकों एवं पशुपालकों के प्रशिक्षण के दौरान आवास व्यवस्था हेतु रू. 3.6 करोड़ की लागत से पशुपालन प्रक्षेत्र, आधारताल में भवन निर्माण की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है, जिसका शीघ्र निर्माण किया जायेगा। इसका शिलान्याश 16 तारिख को म.प्र. केबिनेट ने किया और पी.ए.यू. एजेन्सी इसका निर्माण करेगी।

विश्वविद्यालय के नये प्रशासनिक भवन में स्थानांतरण : वर्ष 2019 के प्रथम सप्ताह से विश्वविद्यालय के प्रशासनिक विभागों का स्थानांतरण नये प्रशासनिक भवन, आधारताल में स्थानांतरित कर कार्य सुचारू रूप से संचालित किये गये।

सुपर स्पेशिलिटी अस्पताल का निर्माण : सुपर स्पेशिलिटी अस्पताल का उदघाटन तत्कानलीन पशुपालन मंत्री श्री अन्तर सिंह आर्या के करकमलों द्वारा दिनांक 23 अगस्त 2017 को किया गया ।

केन्द्रीय लेबोरेटरी एनीमल हाऊस का निर्माण : केन्द्रीय लेबोरेटरी एनीमल हाऊस का उद्घाटन श्री तरूण भनोत जी, वित्त मंत्री मध्यप्रदेश शासन तथा श्री अशोक रोहाणी, कैन्ट विधायक के द्वारा दिनांक 15 जनवरी 2019 को किया गया ।

रीवा में 12 करोड़ की लागत से कैम्पस की सड़कों और बिजली का सबस्टेशन का निर्माण हो चुका है, जिसका उद्धाटन तत्कालिन उर्जा एवं खनिज मंत्री, म.प्र. शासन श्री राजेन्द्र शुक्ला द्वारा किया गया

विश्वविद्यालय में 13 दिनों का भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से आयोजित स्वच्छ भारत अभियान ग्रीष्मकालीन 100 दिन इंटर्नशिप के अंतर्गत नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर के 19 छात्रों ने ग्राम सालीवाड़ा, गौर जाकर पशु टीकाकरण, प्राथमिक उपचार, नशा मुक्ति जागरूकता अभियान में भाग लिया। विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा टी.बी. पीड़ित बच्चों को पोषण की मदद की गई, तथा पांच बच्चे बीमारी से ठीक हो गये।

अनुसंधानिक उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय का प्रथम पेटेंट

विश्वविद्यालय के पशु जैव प्रौद्योगिकी केंद्र ने विश्वविद्यालय का पहला पेटेंट अर्जित किया है। नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के 02 वैज्ञानिकों द्वारा विश्व बैंक पोषित, आई.सी.ए.आर.– एन.ए.आई. पी. प्रोजेक्ट के अंतर्गत् अनुसंधान द्वारा उपरोक्त हैन्डमेड क्लोनिंग तकनीक का सरलीकरण किया गया एवं बौद्धिक

संपदा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा एक पेटेंट प्राप्त किया, जिसका पेटेंट नं. 297821 है।

स्तंभ कोशिका (स्टेम सेल) द्वारा हड्डियों को जोड़ने हेतू प्रयोग

पशु जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र के कोशिका संवर्धन एवं स्तंभ कोशिका (स्टेम सेल) प्रयोगशाला द्वारा मिजेनकाइमल स्टेम सेल उत्पन्न कर सरर्जरी विभाग में संवचालित शल्य चिकित्सा परियोजना हेतु हड्डियों को जोड़ने के लिए प्रयोग में लाया गया जिसके उत्साह जनक परिणाम पाये गये ।

सुपरओवुलोशन एवं इम्ब्रायो ट्रांसफर टेक्नोलॉजी द्वारा एक स्वस्थ साहीवाल बछिया का जन्म

जैव प्रौद्यौगिकी केंद्र के अंतर्गत पशु मादा रोग विभाग की सहायता से ''राष्ट्रीय कृषि विकास परियोजना'' के अंतर्गत सुपरओवुलोशन एवं Surrogacy द्वारा एक स्वस्थ साहीवाल बछिया देशी गायों में पैदा की गई। इस प्रकिया के अंतर्गत साहीवाल मादा गाय से सुपरओवुलोशन द्वारा प्राप्त की गई भ्रूण को एक देशी गाय में प्रत्यारोपित की गई, जिससे 09 माह पश्चात् एक स्वस्थ साहीवाल बछिया का जन्म हुआ। इस विश्वविद्यालय की इस क्षेत्र की पहली उपलब्धि है।

पंचगव्य उत्पादों का निर्माण

विश्वविद्यालय परिसर में देसी गाय के मल–मूत्र से पंचगव्य तत्वों का उत्पादन किया जा रहा है इस इकाई द्वारा निर्मित गोबर गमला, जो कि नर्सरी में पॉलिथीन को प्रतिस्थापित कर पर्यावरण मित्र का कार्य करेगा। इसके अतिरिक्त गोबर के उपले (कंडे), आसवनीकृत गौमूत्र, मच्छर

मार अगरबत्ती एवं औषधीय दवाईयों का उत्पादन प्रारंभ कर दिया गया है।

नर्मदा निधि कुक्कुट प्रजाति का विकास

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के अंतर्गत पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर के मुर्गीपालन विभाग द्वारा ऐसे अण्डों का उत्पादन किया जा रहा है, जिसमें कि सामान्य अण्डों की तुलना में 15 प्रतिशत तक कम कॉलेस्ट्रोल एवं अधिक मात्रा में सेलेनियम, विटामिन ई अधिक मात्रा में पाया गया है। ऐसे उत्पादित अण्डों की लागत 8.33 रू. प्रति अण्डे के लगभग आती है। इस विभाग द्वारा एक नई कुक्कुट प्रजाति ''नर्मदा निधि'' विकसित की गई है, जो कि कड़कनाथ एवं जबलपुर कलर प्रजाति के बैक क्रासिंग द्वारा विकसित की गई है। इस प्रजाति को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली (आई. सी.ए.आर.) द्वारा रजिस्टर्ड कर मान्यता प्रदान की गई है।

पशुओं के कृत्रिम पैर का निर्माण

पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के शल्यचिकित्सा विभाग, जबलपुर द्वारा पॉलि–प्रोपाईलीन फाईबर से निर्मित एक कृत्रिम पैर विकसित किया गया है, जिसके उपयोग से विकलांग पशुओं का पुनर्वास किया जा सकेगा। यह पैर आई. आई.आई,टी.डी.एम. के स्नातकोत्तर छात्रों एवं भारतीय कृत्रिम पैर निर्माण संस्थान रिछाई, जबलपुर के सहयोग से तैयार किया गया।

औषधीय वाटिका का निर्माण

विश्वविद्यालय द्वारा आमानाला फार्म में एक औषधीय वाटिका आयुर्वेट लिमिटेड, नई दिल्ली के सहयोग से विकसित

की गई है, जिसमें 5 एकड़ जमीन में 22 जड़ी–बूटीयों की प्रजातियों को विकसित किया जा रहा है। मुकुना प्रूरिएंस नामक एक सक्षम जड़ी–बूटी जो कि पार्किन्सन नामक रोग के उपचार में सहायक है, का उत्पादन कर रहा है। अन्य जड़ी–बूटी जैसे कालमेघ, ब्राम्ही, अश्वगंधा, पुनेरनावा, एमाल्टास, एलोवेरा, करकूमा काक्सिया, गिलोय, नीम इत्यादि को भी उत्पादन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के आय के स्त्रोत में वृद्धि हेतु सभी उत्पादों को आयुर्वेट लिमिटेड द्वारा खरीदा जायेगा।

विश्वविद्यालय का विभिन्न संस्थानों से एम.ओ.यू.

विश्वविद्यालय ने विभिन्न मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से एम.ओ.यू. में हस्ताक्षर कर अग्रिम अनुसंधान कार्यों से प्रदेश के किसानों के हित में नित नये आयाम प्रस्तुत कर रहे हैं। जिसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय वचनबद्ध है। इन संस्थानों के अन्तर्गत सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च ऑन बफैलो(CIRB), हिसार, सेंट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑन गोट (CIRG), मकदूम, आयुर्वेट लिमिटेड, नई दिल्ली, भारतीय कृषि कौशल परिषद, भारतीय प्रौद्यौगिकी संस्थान, नई दिल्ली एवं रिसर्च फॉर रिर्सजेन्श फॉउन्डेशन, नागपुर के साथ एम.ओ.यू किया जा चुका है ।

कोर्नेल यूनिवर्सिटी के साथ एम.ओ.ए.

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ वाईल्डलाईफ फॉरेंसिक एण्ड हैल्थ, जबलपुर के द्वारा किये गये जंगली बिल्लियों की प्रजाति में कैनाईन डिस्टेंपर नामक बीमारी के ऊपर अध्ययन को देखकर कोर्नेल विश्वविद्यालय, न्यूयार्क के वैज्ञानिकों ने विटनरी विश्वविद्यालय, जबलपुर के साथ इस शोध कार्य को आगे बढ़ाने हेतु एमओयू करने की इच्छा जाहिर की। इस एम.ओ.ए. को स्वीकृति हेतु डी.ए.आर.ई., नई दिल्ली भेजा गया है।

वैस्तारिक उपलब्धियाँ

सम्मान एवं पुरूस्कार – माननीय कुलपति का सम्मान वि.वि. स्थापना दिवस समारोह में ''लाइफ टाईम अचीवमेंट पुरूस्कार'', वेटनरी वि.वि. की डॉ शिवांगी पाठक एवं डॉ. श्वेता डोंगरे को युवा वैज्ञानिक पुरूस्कार, वि.वि. के बेस्ट टीचर अवार्ड, उत्तराखंड सरकार द्वारा पलायन आयोग के सदस्यमनोनीत, विश्वविद्यालय के डेयरी फार्ममें दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, प्रशिक्षण/कार्यशाला/संगोष्ठी/प्रर्दशनी–डेयरी विकास पर कार्यशाला, ''पशु उत्पादकता वृद्धि हेतु पशुपालन की उन्नत तकनीकी'' विषय पर मैनेज प्रशिक्षण, किसानों एवं महिला कृषकों को प्रशिक्षण अर्जित ज्ञान का सार्थक उपयोग ही प्रशिक्षण–वी.यू. में 5 दिवसीय एस्काड ट्रेनिंग–2, नेशनल मिल्क–डे–2018 कार्यक्रम, पशु स्वास्थ्य शिविर, किसानों की आय वृद्धि के स्त्रोत, फार्मर परियोजना, उन्नत भारत अभियान, उप जनजातीय परियोजना, मेरा गॉव मेरा गौरव, पं. दीन दयाल उपाध्याय उन्नत कृषि शिक्षा योजना, नर्मदा सेवा यात्रा 2017–18, आल ब्रीड ओपन डॉग शो का आयोजन, बाघों की कैनाइन डिस्टेंपर बीमारी पर अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर कार्य योजना, वि.वि. में वन्यजीव फोरेन्सिक एवं हेल्थ विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन, बकरी पालन आय का उत्तम साधन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, निःशुल्क पशु उपचार एवं परिजीवी नियंत्रण शिविर का आयोजन, माननीय राज्यपाल द्वारा विश्वविद्यालय में पशुपालन प्रर्दशनी एवं संगोष्ठी का अवलोकन, गौ–संवर्धन एवं पंचगव्य उत्पाद प्रर्दशनी का आयोजन उदबोधन/भाषण/व्याख्यानों का आयोजन, डी.डी. किसान चैनल व वेबसाइट लिंक से सीधा प्रसारण सफलतापूर्वक आयोजन, ज्ञान का व्यापक प्रचार–प्रसार पर उद्बोधन, नर्मदा निधि कुक्कट का वितरण,

डॉ. राठौर द्वारा वी.यू. की केंचुआ खाद उत्पादन इकाई का लोकापर्ण, मछली बीज एवं निषेचित अण्डों का वितरण, सामूहिक/वूहत टीकाकरण कार्यक्रम, विश्व पशु चिकित्सा दिवस में श्वानों में निःशुल्क रेबीज टीकाकरण, वि.वि. ने गॉव एवं क्षय रोग पीड़ित बच्चों को गोद लिया, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के अंतर्गत संचालित पंचगव्य निर्माण इकाई का भ्रमण, राष्ट्रऋषि व स्वप्नदृष्टा नानाजी देशमुख जी ''भारत रत्न से अंलकृत'' की प्रतिमा स्थापित करने के लिये स्थल निरीक्षण, जैविक कृषि ग्राम का विकास, केरल आपदा में वि.वि. से राहत एवं वि.वि. में पर्यावरण शिक्षा को भी शामिल करने हेतु पहल जारी है ।

फार्मर फर्स्ट परियोजना : फार्मर फर्स्ट के अंतर्गत 78 किसानों को प्रशिक्षण दिये गये। फार्मर फर्स्ट के अंतर्गत दो किसान संगोष्ठी का आयोजन कर 87 किसानों को प्रशिक्षण दिया गया। इसी परियोजना के अंतर्गत 06 पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कर 1039 किसानों को लाभान्वित किया गया। इस परियोजना में ही नर्मदा निधि मुर्गी (42 नग), सिरोही बकरी (164 नग), अनार एवं पपीता फलदार पौधों (1000 पौधे) का वितरण 06 अंगीकृत गांवों में किया गया एवं 09 वर्मी कम्पोस्ट प्लांट यूनिट एवं 09 अजोला यूनिट की स्थापना भी की गई।

किसानों एवं महिला किसानों को प्रशिक्षण

ट्राईबल सब–प्लान : विश्वविद्यालय के अंतर्गत पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर द्वारा वर्ष 2017–18 में ट्राईबल सब–प्लान के अंतर्गत 03 गॉव क्रमशः घुघरी ग्राम में 02 प्रशिक्षण कार्यक्रम जिसमें 40–40 एवं डोभी ग्राम में 33 कुल 113 किसान एवं महिला किसान प्रशिक्षण

कार्यक्रम में भाग लेकर लाभान्वित हुए। पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, रीवा द्वारा के अंतर्गत 03 गॉव क्रमशः कुसमी, कामछ एवं दौरी ग्राम में 40–40 कुल 120 किसान एवं महिला किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेकर लाभान्वित हुए। पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू के अंतर्गत् 30–30 कुल 60 किसान एवं महिला किसान भाग लेकर लाभान्वित हुए।

विश्वविद्यालय के अंतर्गत पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर द्वारा आयोजित संगोष्ठी में वर्ष 2017–18 में ट्राईबल सब–प्लान के अंतर्गत 02 गॉव के 55 किसान एवं महिला किसान तथा पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू द्वारा आयोजित संगोष्ठी में वर्ष 2017–18 में ट्राईबल सब–प्लान के अंतर्गत 05 गॉव के 200 किसान एवं महिला किसान भाग लेकर लाभान्वित हुए।

"उन्नत भारत परियोजना" एवं "मेरा गांव मेरा गौरव" – उन्नत भारत परियोजना के अंतर्गत 13 गाँव विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिया गया।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय उन्न्त कृषि शिक्षा योजनाः पंडित दीन दयाल उपाध्याय उन्न्त कृषि शिक्षा योजना के अंतर्गत Organic farming / Natural farming / Cow based economy पर किसानों के प्रशिक्षण हेतु विश्वविद्यालय में पृथक से केंद्र बनाये गये हैं। वर्ष 2017–18 में 30 किसानों को इस परियोजना के अंतर्गत प्रशिक्षण देकर लाभान्वित किया गया।

आज मैंने इस दीक्षांत समारोह के अवसर पर सभी निर्वतमान स्नातकों का ध्यान राज्य में पशुधन क्षेत्र में संभावनाएँ एवं सीमाओं की ओर आकर्षित करने की कोशिश

की है । स्नातकों के समक्ष मैंने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक पेश की हैं । प्रिय स्नातकों, पशुधन क्षेत्र भविष्य में फलने–फूलने के लिये उतावला है । इसे विश्वविद्यालय में अपने प्रवास के दौरान आपकों पेशे की चुनौतियॉ स्वीकारने एवं राज्य के किसानों के कल्याण के लिये काम करने के लिये प्रशिक्षित किया गया है । अब इस पेशे को अपने प्रयासों के द्वारा ऊचाईयों पर ले जाये जिससे देश के विकास में आपकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके ।

मै आप सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या वाचस्पति उपाधि से अलंकृत किये जाने पर बधाई एवं शुभकामनाऍ देता हॅू एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हॅू ।

मैं महामहिम राज्यपाल महोदया का हृदय से आभारी हॅू तथा उपस्थित विदवतजन एवं विशिष्ट अतिथिगणों को धन्यवाद देता हॅू ।

धन्यवाद

जय हिन्द, जय भारत ।

भारत रत्न पद्म विभूषण
चंडिकादास अमृत राव (नानाजी) देशमुख
(1916 - 2010)

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय
प्रशासनिक भवन, अधारताल, जबलपुर 482 004 (म.प्र.)

NANAJI DESHMUKH VETERINARY SCIENCE UNIVERSITY
Administrative Building, Adhartal, Jabalpur 482 004 (M.P.)